

(1)  
शारदा वन्दन

मेरा हंस बनें तब वाहन,  
ऐसी कृपा करो।  
ज्ञान मिहिर कर उदित गगन में,  
सद्यः तिमिर हरो॥  
शारदे ऐसी कृपा करो॥ 1 ॥

पुस्तक तक न रहे परिसीमित,  
मन में ज्ञान भरो।  
वरद हस्त निज मम नत शिर पर,  
ममता युक्त धरो॥  
शारदे ऐसी कृपा करो॥ 2 ॥

नीर क्षीर सुविवेक जगे शुभ,  
फिर से हंस करो।  
षड्गिपु को कर पूर्ण पराजित,  
तृष्णा दंश हरो ॥  
शारदे ऐसी कृपा करो॥ 3 ॥

विकसित कर वह शुभ्र सहसदल,  
सुरभित प्राण करो।  
गुंजित हो उर मध्य आदि स्वर,  
तन्त्री मुखर करो ॥ 4 ॥  
शारदे ऐसी कृपा करो।  
-शिव कुमार मिश्र-